राष्ट्रीय शिक्षा नीति आधारित प्रस्तावित पाठ्यक्रम

स्नातकोत्तर हिन्दी पाठ्यक्रम

(M.A. Hindi Syllabus)

(अगस्त, 2022)

पाठ्यक्रम का विवरण

(Course Structure)

Semester	CC[1]	DSEC[2]	GEC[3]	RM[4]	SEC[5]	Paper	Credit	Marks
First Semester	02	02	01	--------		05	20	500
Second Semester	02	02	-------	01	01	06	24	600
Third Semester	03	03	---------			06	24	600
Fourth Semester	Dissertation (Discipline Specific)					01	20	500
Total						18	88	2200

[1]CC- Core Course/ मूल पाठ्यक्रम

[2]DSEC- Discipline-Specific Elective Course/ विशिष्ट अनुशासन वैकल्पिक पाठ्यक्रम

[3]GEC- Generic Elective Course/ सामान्य वैकल्पिक पाठ्यक्रम

[4] Research Methodology/ शोध प्रविधि

[5]Skill Enhancement Course/ कौशल वृद्धि पाठ्यक्रम

स्नातकोत्तर हिन्दी पाठ्यक्रम

पत्र-विवरण

प्रथम सत्र

प्रश्नपत्र का कोड	प्रश्नपत्र का नाम	क्रेडिट	अंक
HIN-CC-500	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आरंभ से रीतिकाल तक)	4	100
HIN-CC-501	मध्यकालीन हिन्दी काव्य	4	100
HIN-DSEC-502	भारतीय काव्यशास्त्र, अथवा MOOCs Through SWAYAM	4	100
HIN-DSEC-503	हिन्दी कथा साहित्य, अथवा MOOCs Through SWAYAM	4	100
HIN-GEC-504	हिन्दी व्याकरण एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी	4	100
		20	500

द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र का कोड	प्रश्नपत्र का नाम	क्रेडिट	अंक
HIN-CC-505	आधुनिक हिन्दी कविता	4	100
HIN-CC-506	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	4	100
HIN-DSEC-507	आधुनिक भारतीय साहित्य, अथवा MOOCs Through SWAYAM	4	100
HIN-DSEC-508	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल) अथवा, MOOCs Through SWAYAM	4	100
HIN-RM-509	शोध प्रविधि, अथवा MOOCs Through SWAYAM	4	100
HIN-SEC-510	अनुवाद : सिद्धान्त एवं व्यवहार	4	100
		24	600

तृतीय सत्र

प्रश्नपत्र का कोड	प्रश्नपत्र का नाम	क्रेडिट	अंक
HIN-CC-600	आदिकालीन हिन्दी काव्य	4	100
HIN-CC-601	हिन्दी गद्य : विविध विधाएं	4	100
HIN-CC-602	हिन्दी आलोचना एवं विमर्श	4	100
HIN-DSEC-603	भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा एवं लिपि अथवा, MOOCs Through SWAYAM	4	100
HIN-DSEC-604	लोक साहित्य अथवा, MOOCs Through SWAYAM	4	100
HIN-DSEC-605	रचनात्मक लेखन अथवा, MOOCs Through SWAYAM	4	100
		24	600

चतुर्थ सत्र

प्रश्नपत्र का कोड	प्रश्नपत्र का नाम	क्रेडिट	अंक
HIN-DSEC-606	लघु शोध - प्रबंध	20	500
	विषय निर्वाचन एवं प्रमाणीकरण	**2**	**50**
	प्रस्ताव लेखन एवं प्रस्तुति	**3**	**75**
	सामग्री संकलन एवं विश्लेषण	**3**	**75**
	लघु शोध-प्रबंध लेखन	**8**	**200**
	मौखिकी	4	100
		20	500

सामान्य निर्देश:

1. सैद्धांतिक विषयों के लिए एक क्रेडिट पंद्रह अध्यापन घंटे के समतुल्य होगा।
2. सामान्य वैकल्पिक पाठ्यक्रम (**Generic Elective Course**) सभी विषय/विभाग के विद्यार्थियों के लिए है। इसे दूसरे विषय/विभाग के विद्यार्थी भी चयन कर सकेंगे। सम्बंधित विषय/विभाग के विद्यार्थी भी इसके बदले में दूसरे विषय/विभाग के सामान्य वैकल्पिक (**Generic Elective Course**) का चयन कर सकेंगे।
3. कोई भी विद्यार्थी सम्पूर्ण निर्धारित क्रेडिट प्वाइंट का अधिकतम 40% क्रेडिट प्वाइंट सामान्य वैकल्पिक पाठ्यक्रम (**Generic Elective Course**) या शोध प्रविधि (**Research Methodology**) के बदले मूक (स्वयं)/**MOOCs (Swayam)** से प्राप्त कर सकता है।
4. प्रथम सत्र में 5 प्रश्नपत्र हैं, जिनमें सभी पत्र 4-4 क्रेडिट तथा 100-100 अंक के होंगे। समग्रत: यह सत्र 20 क्रेडिट अर्थात 500 अंकों का होगा।
5. द्वितीय सत्र में 6 प्रश्नपत्र हैं, जिनमें सभी पत्र 4-4 क्रेडिट तथा 100-100 अंक के होंगे। समग्रत: यह सत्र 24 क्रेडिट अर्थात 600 अंकों का होगा।
6. तृतीय सत्र में 6 प्रश्नपत्र हैं, जिनमें सभी पत्र 4-4 क्रेडिट तथा 100-100 अंक के होंगे। समग्रत: यह सत्र 24 क्रेडिट अर्थात 600 अंकों का होगा।
7. चतुर्थ सत्र लघु शोध प्रबंध प्रस्तुति का होगा। यह प्रश्नपत्र 20 क्रेडिट अर्थात 500 अंकों का होगा। अंकों का विभाजन-आधार प्रश्नपत्र के अंतर्गत दिया गया है। विभाग में संचालित समस्त प्रश्नपत्रों के शिक्षण का माध्यम हिंदी भाषा होगा।

प्रथम सत्र

प्रथम प्रश्नपत्र

HIN-CC-500 हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से मध्यकाल तक) क्रेडिट-4/अंक -100

परिचय: यह हिंदी साहित्य के इतिहास का प्रश्नपत्र है जिसमें आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक के इतिहास का अध्ययन किया जाएगा । इसमें साहित्य इतिहास दर्शन और साहित्य इतिहास लेखन कि परंपरा के साथ साथ भक्तिकाल और रीतिकाल की परिस्थितियों, साहित्यिक प्रवृत्तियों एवं दोनों कालखंडों के कवियों का भी अध्ययन एवं मूल्यांकन शामिल है । इस प्रश्नपत्र का अध्ययन करके छात्र-छात्राएं साहित्य के इतिहास के क्रमिक विकास एवं उसकी ऐतिहासिक महत्ता से परिचित होंगे ।

इकाई 1 साहित्येतिहास दर्शन, हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परंपरा, हिन्दी साहित्य का काल विभाजन एवं नामकरण, आदिकाल की परिस्थितियां, आदिकालीन काव्य धाराएं ।

इकाई 2 भक्ति आन्दोलन : उद्भव एवं विकास; भक्तिकालीन परिस्थितियां; संतकाव्य की वैचारिकी, सामान्य परिचय एवं वैशिष्ट्य; सूफीकाव्य की वैचारिकी, सामान्य परिचय एवं वैशिष्ट्य ।

इकाई 3 कृष्णकाव्य : वैचारिकी, सामान्य परिचय एवं वैशिष्ट्य; रामकाव्य : वैचारिकी, सामान्य परिचय एवं वैशिष्ट्य ।

इकाई 4 रीतिकालीन काव्य: परिस्थितियां, विभिन्न धाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त), सामान्य परिचय एवं वैशिष्ट्य, मध्यकालीन गद्य साहित्य ।

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. उत्तर भारत की संत परंपरा, परशुराम चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. भक्ति आन्दोलन और भक्ति काव्य, शिव कुमार मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. हिंदी साहित्य का आदिकाल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
4. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
5. हिंदी साहित्य : उद्भव एवं विकास, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. हिंदी साहित्य का इतिहास (संपा.) डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
8. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

निर्देश :

1. इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है, जिसमें बाह्य परीक्षा हेतु 75 एवं आंतरिक परीक्षा हेतु 25 अंक निर्धारित है।
2. इस प्रश्नपत्र की परीक्षा अवधि 3 घंटे की होगी ।
3. प्रत्येक इकाई से 2-2 आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा (15x4=60अंक) ।
4. प्रत्येक इकाई से अनिवार्यतः एक-एक किन्तु कुल पांच टिप्पणियां पूछी जाएँगी, जिनमें से किन्हीं तीन का उत्तर लिखना होगा (5x3=15 अंक) ।

द्वितीय प्रश्नपत्र

HIN-CC-501 **मध्यकालीन काव्य** **क्रेडिट – 4 / अंक -100**

परिचय: इस प्रश्नपत्र में कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास जैसे भक्ति काव्यधारा के प्रमुख कवियों की रचनाओं का अध्ययन एवं मूल्यांकन होगा साथ ही इस प्रश्नपत्र में रीति काव्यधारा के कवियों – केशवदास, बिहारी, मतिराम और घनानंद की रचनाओं का भी अध्ययन एवं मूल्यांकन सम्मिलित है। इस प्रश्नपत्र के माध्यम से भक्तिकाल एवं रीतिकाल की श्रेष्ठ रचनाशीलता का विस्तृत ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

इकाई 1 अ. कबीर: कबीर ग्रंथावली – सं. डॉ. श्यामसुन्दर दास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
पाठ्य - साखी- गुरुदेव कौ अंग - 1, 2, 3,11,16, 20, 25, 33

ब. जायसी: जायसी ग्रंथावली- सं. आ. रामचंद्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
पाठ्य - नागमती वियोग खंड

इकाई 2 अ. सूरदास : भ्रमरगीतसार- सं. आ. रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
पाठ्य: पद सं. 23, 25, 34, 38, 41, 45, 50, 56

ब. गोस्वामी तुलसीदास: रामचरित मानस- गीता प्रेस, गोरखपुर।
पाठ्य : उत्तरकाण्ड से दोहा-चौपाई 117 से 124 तक

इकाई3 अ. केशवदास- रीतिकाव्य धारा- सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
रामचंद्रिका से 'वनमार्ग में राम' नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

ब. बिहारी: रीतिकाव्य धारा- सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
पाठ्य : दोहा सं 1, 3, 7, 10, 15, 21, 25, 32, 34, 36, 38, 45, 48, 50, 64, 67, 69, 71,73, 75

इकाई4 अ. मतिराम: रीतिकाव्य धारा- सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
पाठ्य : पद सं 1, 3, 6, 9, 12, 16

ब. घनानंद : रीतिकाव्य धारा- सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
पाठ्य : प्रारंभ से 06 पद

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. अकथ कहानी प्रेम की, पुरुषोत्तम अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. आचार्य केशवदास, हीरालाल दीक्षित, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
3. कबीर, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बम्बई
4. कबीर मीमांसा, डॉ. रामचंद्र तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. जायसी, विजय देव नारायण साही, हिन्दुस्तान एकेडमी, इलाहाबाद
6. त्रिवेणी, रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

निर्देश :

1. इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है, जिसमें बाह्य परीक्षा हेतु 75 एवं आतंरिक परीक्षा हेतु 25 अंक निर्धारित है।
2. इस प्रश्नपत्र की परीक्षा अवधि 3 घंटे की होगी।
3. प्रत्येक इकाई से 2-2आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा (15x4=60अंक)।
4. प्रत्येक इकाई से अनिवार्यतःएक-एक किन्तु कुल पांच व्याख्याएं पूछी जाएँगी जिनमें से किन्हीं तीन की व्याख्या करनी होगी (5x3=15 अंक)।

तृतीय प्रश्नपत्र

HIN-DSEC-502 **भारतीय काव्यशास्त्र** **क्रेडिट-4/अंक-100**

परिचय: इस प्रश्नपत्र में भारतीय काव्यशास्त्र का सैद्धांतिक परिचय दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त इस प्रश्नपत्र में भारतीय काव्यशास्त्र के विकास की यात्रा भी सम्मिलित है। अलंकार सिद्धांत एवं रीति सम्प्रदाय जो कि भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा में सर्वप्रमुख है उनके विविध पक्षों का भी इस प्रश्नपत्र में अध्ययन किया जाएगा। भारतीय काव्यशास्त्र के मूल्य, महत्त्व एवं वर्तमान कविता में उसकी उपयोगिता का उद्घाटन इस प्रश्नपत्र के द्वारा हो सकेगा।

इकाई 1 भारतीय काव्यशास्त्र का सामान्य परिचय; रस-सिद्धान्त: रस की परिभाषा, अवयव, स्वरूप, रस-निष्पत्ति, साधारणीकरण।

इकाई 2 अलंकार सिद्धान्त: स्वरूप, अवधारणा एवं वर्गीकरण; ध्वनि संप्रदाय: ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि-सिद्धान्त की स्थापना, ध्वनि के भेद, ध्वनि-काव्य के भेद।

इकाई 3 रीति संप्रदाय : अवधारणा एवं वर्गीकरण; वक्रोक्ति संप्रदाय : अवधारणा एवं वर्गीकरण; औचित्य संप्रदाय: अवधारणा एवं वर्गीकरण।

इकाई 4 काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य गुण, काव्यदोष, छंद : परिचय, परिभाषा एवं भेद।

अभिस्तावित पुस्तकें:

1. अलंकार धारणा: विकास और विश्लेषण, शोभाकान्त मिश्र, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना
2. काव्य कल्पद्रुम (भाग-1 एवं 2)- कन्हैयालाल पोद्दार, अग्रवाल प्रेस, मथुरा
3. काव्यशास्त्र, डॉ. भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यसिद्धांत, गणपतिचन्द्र गुप्त, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. भारतीय काव्यशास्त्र के नए क्षितिज, डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. रीतिकाव्य की भूमिका, डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
7. रसमीमांसा- रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
8. रस सिद्धान्त, डॉ. नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

निर्देश :

1. इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है, जिसमें बाह्य परीक्षा हेतु 75 एवं आतंरिक परीक्षा हेतु 25 अंक निर्धारित है।
2. इस प्रश्नपत्र की परीक्षा अवधि 3 घंटे की होगी।
3. प्रत्येक इकाई से 2-2 आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा (15x4=60 अंक)।
4. प्रत्येक इकाई से अनिवार्यतः एक-एक किन्तु कुल पांच टिप्पणियां पूछी जाएँगी, जिनमें से किन्हीं तीन का उत्तर लिखना होगा (5x3=15 अंक)।

चतुर्थ प्रश्नपत्र

HIN-DSEC-503 **हिन्दी कथा साहित्य** **क्रेडिट-4/अंक-100**

परिचय: यह प्रश्नपत्र चार इकाइयों में विभाजित है, जिसमें हिंदी साहित्य के तीन प्रमुख उपन्यास और आठ कहानियां सम्मिलित हैं। प्रारम्भिक चार कहानियां स्वाधीनता पूर्व की कहानियां हैं और शेष चार कहानियां भारत की स्वाधीनता के बाद लिखी गई। हिंदी कथा साहित्य की परंपरा से परिचित कराते हुए विद्यार्थियों के भीतर उसकी महत्ता का विकास करना इस प्रश्नपत्र का मूल उद्देश्य है।

इकाई 1 गोदान- प्रेमचंद (उपन्यास)

इकाई 2 शेखर : एक जीवनी (भाग-1)- अज्ञेय (उपन्यास)

इकाई 3 मैला आँचल – फणीश्वर नाथ रेणु (उपन्यास)

इकाई 4 पाठ्य कहानियां :

- उसने कहा था- चंद्रधरशर्मा गुलेरी
- ईदगाह – प्रेमचंद
- पुरस्कार- जयशंकर प्रसाद
- पाजेब- जैनेन्द्र कुमार
- मलबे का मालिक – मोहन राकेश
- यही सच है- मन्नू भंडारी
- डिप्टी कलेक्टरी- अमरकांत
- छप्पन तोले की करधन- उदय प्रकाश

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. आस्था के चरण- डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
2. अज्ञेय और उनके उपन्यास- गोपाल राय, दि मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड,दिल्ली
3. उपन्यास और लोक जीवन-राल्फ फॉक्स, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लिमेटेड, दिल्ली
4. कहानी का स्वरूप और संवेदना- राजेंद्र यादव, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5. गोदान नया परिप्रेक्ष्य- गोपाल राय, नयी किताब प्रकाशन समूह,दिल्ली
6. प्रेमचंद और उनका युग- रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7. हिंदी कहानी का विकास-मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
8. हिंदी कहानी का शिल्प विधान-लक्ष्मी नारायण लाल, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद
9. हिंदी उपन्यास-रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

निर्देश :

1. इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है, जिसमें बाह्य परीक्षा हेतु 75 एवं आतंरिक परीक्षा हेतु 25 अंक निर्धारित है।
2. इस प्रश्नपत्र की परीक्षा अवधि 3 घंटे की होगी।
3. प्रत्येक इकाई से 2-2आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा (15x4=60 अंक)।
4. प्रत्येक इकाई से अनिवार्यतःएक-एक किन्तु कुल पांच व्याख्याएं पूछी जाएँगी जिनमें से किन्हीं तीन की व्याख्या करनी होगी (5x3=15 अंक)।

पंचम प्रश्नपत्र

HIN-GEC-504 **हिन्दी व्याकरण एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी** **क्रेडिट-4/अंक -100**

परिचय: यह प्रश्नपत्र चार इकाइयों में विभाजित है। हिंदी व्याकरण के अंतर्गत संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, वचन, प्रत्यय, सहायक क्रिया तथा पदों के विकास आदि का अध्ययन किया जाएगा। हिंदी भाषा वर्तमान समय में अपनी अनेक भूमिकाओं में विकसित हो चुकी है जैसे परिनिष्ठित हिंदी, प्रयोजनमूलक हिन्दी इत्यादि। प्रयोजनमूलक हिंदी और कार्यालयी हिंदी के विविध पक्षों का अध्ययन तथा व्यावसायिक हिंदी के उपयोग का अध्ययन भी इसमें सम्मिलित है। हिंदी व्याकरण मानक हिंदी भाषा की रीढ़ है जिसकी सटीक समझ विकसित करना इस प्रश्नपत्र का मूल प्रयोजन है।

इकाई 1 हिन्दी रूपरचना : हिन्दी संज्ञा, लिंग, वचन, उपसर्ग, प्रत्यय, हिन्दी परसर्गों का विकास; हिन्दी सर्वनाम -पदों का विकास; विशेषण पद की रचना; हिन्दी क्रिया रूपों का विकास : सहायक क्रिया, संयुक्त क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया।

इकाई 2 हिन्दी भाषा के विविध रूप : हिन्दी-हिन्दवी-हिन्दुस्तानी, परिनिष्ठित हिन्दी, साहित्यिक हिन्दी, प्रयोजनमूलक हिन्दी, राष्ट्रभाषा हिन्दी, राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति।

इकाई 3 प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध आयाम : कार्यालयी हिन्दी, जनसंचार की हिन्दी, वाणिज्य एवं विज्ञापन की हिन्दी, विज्ञान एवं कंप्यूटर की हिन्दी।

इकाई 4 कार्यालयी हिन्दी - अनुप्रयुक्ति क्षेत्र : पत्र लेखन एवं उसके प्रकार, प्रारूप लेखन, टिप्पण, प्रतिवेदन, संक्षेपण, परिपत्र, सूचना, अधिसूचना, अनुस्मारक।

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. हिन्दी व्याकरण-कामता प्रसाद गुरु, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी- डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी-डॉ. विजयपाल सिंह, संजय बुक सेंटर, वाराणसी
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी- रवीन्द्र कुमार श्रीवास्तव, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
5. प्रयोजनमूलक हिन्दी: सिद्धांत एवं प्रयोग- डॉ. दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

निर्देश :

1. इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है, जिसमें बाह्य परीक्षा हेतु 75 एवं आतंरिक परीक्षा हेतु 25 अंक निर्धारित है।
2. इस प्रश्नपत्र की परीक्षा अवधि 3 घंटे की होगी।
3. प्रत्येक इकाई से 2-2 आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा (15x4=60 अंक)।
4. प्रत्येक इकाई से अनिवार्यतः एक-एक किन्तु कुल पांच टिप्पणियां पूछी जाएँगी, जिनमें से किन्हीं तीन का उत्तर लिखना होगा (5x3=15 अंक)।

द्वितीय सत्र

प्रथम प्रश्नपत्र

HIN-CC-505 **आधुनिक हिन्दी कविता** **क्रेडिट-4/अंक-100**

परिचय: यह प्रश्नपत्र चार इकाइयों में विभाजित है । आधुनिक हिंदी कविता भारतेंदु काल से आरम्भ होती है इसीलिए आधुनिक हिंदी कविता के आरंभिक कवि मैथिलिशरण गुप्त से लेकर नयी कविता के प्रतिनिधि कवि मुक्तिबोध की कविताई का अध्ययन इस प्रश्नपत्र के अंतर्गत होगा । इस प्रश्नपत्र के माध्यम से विद्यार्थी न केवल आधुनिक हिंदी कविता की परंपरा से परिचित होंगे बल्कि उन्हें इसका भी ज्ञान होगा कि आगामी हिंदी कविता की यात्रा के लिए कविता की यह पूर्व परंपरा कितने अनिवार्य महत्त्व की है।

इकाई 1	क.	मैथिलीशरण गुप्त (साकेत- नवम् सर्ग) ।
	ख.	जयशंकर प्रसाद (कामायनी-श्रद्धा सर्ग) ।
इकाई 2	क.	सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला (राम की शक्तिपूजा) ।
	ख.	सुमित्रानंदन पंत (परिवर्तन) ।
इकाई 3	क .	महादेवी वर्मा (पंथ होने दो अपरिचित, विरह का जलजात जीवन) ।
	ख.	रामधारी सिंह दिनकर (कुरुक्षेत्र- छठा सर्ग) ।
इकाई 4	क.	सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन अज्ञेय (साम्राज्ञी का नैवेद्य दान) ।
	ख.	गजानन माधव मुक्तिबोध (ब्रह्मराक्षस) ।
	ग.	नागार्जुन (सिंदूर तिलकित भाल) ।
	घ.	शमशेर बहादुर सिंह (अमन का राग) ।

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ- नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. कामायनी अनुशीलन- रामलाल सिंह, इण्डियन प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, प्रयाग
3. कामायनी एक पुनर्विचार- गजानन माधव मुक्तिबोध, राजकमल प्रकशन, दिल्ली
4. कामयानी के अध्ययन की समस्याएँ- डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
5. कवि सुमित्रानन्दन पंत-नन्ददुलारे वाजपेयी, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली
6. जयशंकर प्रसाद- आ. नंददुलारे बाजपेयी, भारती भण्डार लीडर प्रेस, प्रयाग

निर्देश :

1. इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है, जिसमें बाह्य परीक्षा हेतु 75 एवं आतंरिक परीक्षा हेतु 25 अंक निर्धारित है ।
2. इस प्रश्नपत्र की परीक्षा अवधि 3 घंटे की होगी ।
3. प्रत्येक इकाई से 2-2 आलोचनात्मकप्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा (15x4=60 अंक)।
4. प्रत्येक इकाई से अनिवार्यतःएक-एक किन्तु कुल पांच व्याख्याएं पूछी जाएँगी जिनमें से किन्हीं तीन की व्याख्या करनी होगी (5x3=15 अंक) ।

द्वितीय प्रश्नपत्र

HIN-CC-506 **पाश्चात्य काव्यशास्त्र** **क्रेडिट-4/अंक-100**

परिचय: यह प्रश्नपत्र पाश्चात्य काव्यशास्त्र के आरंभिक विकास पर केन्द्रित है जिसमें पाश्चात्य काव्यशास्त्र की विकास की यात्रा सम्मिलित है। प्लेटो, लोंजाईनस, क्रोचे, आई. ए. रिचर्ड्स, वर्ड्सवर्थ और कोलरिज के महत्त्वपूर्ण काव्य सिद्धांतों का अध्ययन इस प्रश्न-पत्र के अंतर्गत किया जायेगा। पाश्चात्य काव्यशास्त्र की श्रेष्ठ परंपरा का ज्ञान अनिवार्य तो है ही साथ ही भारतीय काव्यशास्त्र से किन अर्थों में भिन्न है और विशिष्ट महत्त्व की है इसका ज्ञान कराना प्रश्नपत्र का मूल उद्देश्य है।

इकाई 1 पाश्चात्य साहित्यालोचन के विकास का सामान्य परिचय एवं अध्ययन की परम्पराएँ।

इकाई 2 प्लेटो की काव्य दृष्टि ; अरस्तू का अनुकरण एवं विरेचन सिद्धांत।

इकाई 3 लोंजाइनस का उदात्त सिद्धांत; वर्ड्सवर्थ का काव्यभाषासिद्धान्त; एस. टी. कालरिज का कल्पना सिद्धान्त, क्रोचे का अभिव्यंजनावाद।

इकाई 4 टी. एस. इलियट का परंपरा का सिद्धान्त, निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त; आई. ए. रिचर्ड्स का मूल्य सिद्धान्त।

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास- तारकनाथ बाली, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र- देवेन्द्रनाथ शर्मा, मयूर पेपरबैक्स, दिल्ली
3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परंपरा-डॉ. सावित्री सिन्हा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. पाश्चात्य साहित्य चिन्तन- निर्मला जैन, कुसुम बाठिया, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
5. पाश्चात्य समीक्षा दर्शन-जगदीशचंद जैन, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी
6. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा- रामचंद्र तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन- डॉ. सत्यदेव चौधरी, डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त, नमन प्रकाशन

निर्देश :

1. इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है, जिसमें बाह्य परीक्षा हेतु 75 एवं आतंरिक परीक्षा हेतु 25 अंक निर्धारित है।
2. इस प्रश्नपत्र की परीक्षा अवधि 3 घंटे की होगी।
3. प्रत्येक इकाई से 2-2 आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा (15x4=60 अंक)।
4. प्रत्येक इकाई से अनिवार्यतः एक-एक किन्तु कुल पांच टिप्पणियां पूछी जाएँगी, जिनमें से किन्हीं तीन का उत्तर लिखना होगा (5x3=15 अंक)।

तृतीय प्रश्नपत्र

HIN-DSEC-507 **आधुनिक भारतीय साहित्य** **क्रेडिट-4/अंक-100**

परिचय: इस प्रश्नपत्र के अंतर्गत भारतीय साहित्य की अवधारणा एवं उनकी प्रवृत्तियों का अध्ययन किया जाएगा। यह प्रश्नपत्र भारतीय कविता, कहानी और उपन्यास जैसे तीन रचनात्मक खण्डों में विभाजित है जिसमें रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे कवि, शरणकुमार लिम्बाले जैसे मराठी कहानीकार और शरतचंद्र जैसे बांगला उपन्यासकार सम्मिलित हैं। आधुनिक भारतीय साहित्य की परंपरा का अध्ययन करने के साथ-साथ उसमें निहित श्रेष्ठ रचनाशीलता का ज्ञान प्राप्त करना विद्यार्थियों के बौद्धिक और संवेदनात्मक विकास के लिए विशेष महत्त्व का सिद्ध होगा।

इकाई 1 भारतीय साहित्य की अवधारणा, स्वरूप, अध्ययन की समस्याएँ; तुलनात्मक अध्ययन- इतिहास, प्रवृत्तियाँ एवं स्वरूप।

इकाई 2 कविता: भारत तीर्थ- रवीन्द्र नाथ टैगोर (बांग्ला), लुइतर पारोर अग्निरसुर- ज्योति प्रसाद अगरवाला (असमिया), सुनहरा अनाज - सोसोथाम (खासी), कविता का विकल्प नहीं- राजेंद्र भंडारी (नेपाली) कोई उम्मीद बर नहीं आती- मिर्ज़ा ग़ालिब (उर्दू)।

इकाई 3 कहानी: क्रांतिपर्व- शरणकुमार लिंबाले (मराठी); अनुवादक- निशिकांत ठकार; अतिथि-लमाबम बीरमणि (मणिपुरी), अनुवादक- इबोहल सिंग; निराशा के उस पार- वानललेइतुआंग (मिजो), अनुवादक- बी. आर. राल्टे; गाय, वो मेरी नहीं थी - गोविंद बसुमतारी (बोड़ो), अनुवादक- प्रकाश भातम्ब्रेकर।

इकाई 4 उपन्यास- संस्कार (यू. आर. अनंतमूर्ति), मृत्युंजय (बीरेंद्रकुमार भट्टाचार्य)।

अभिस्तावित पुस्तकें:

1. तुलनात्मक साहित्य- प्रो. इन्द्रनाथ चौधरी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
2. भारत के आदिवासी लेखक: परिचय एवं अवदान- डॉ. रमणिका गुप्त
3. भारतीय साहित्य- डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
4. भारतीय साहित्य अध्ययन की नई दिशाएं- डॉ. प्रदीप श्रीधर
5. भारतीय साहित्य की अवधारणा- डॉ. राजेन्द्र मिश्र, तक्षशिला प्रकाशन
6. भारतीय साहित्य आशा और आस्था- डॉ. आरसू, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
7. भारतीय साहित्य की पहचान- सियाराम तिवारी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
8. भारतीय साहित्य की भूमिका- डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

निर्देश :

1. इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है, जिसमें बाह्य परीक्षा हेतु 75 एवं आतंरिक परीक्षा हेतु 25 अंक निर्धारित है।
2. इस प्रश्नपत्र की परीक्षा अवधि 3 घंटे की होगी।
3. प्रत्येक इकाई से 2-2 आलोचनात्मकप्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा (15x4=60 अंक)।
4. प्रत्येक इकाई से अनिवार्यतः एक-एक किन्तु कुल पांच व्याख्याएं पूछी जाएँगी जिनमें से किन्हीं तीन की व्याख्या करनी होगी (5x3=15 अंक)।

चतुर्थ प्रश्नपत्र

HIN-DSEC-508 **हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)** **क्रेडिट-4/अंक-100**

परिचय: इस प्रश्नपत्र में आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा। इसमें आधुनिक काल की परिस्थितियों के परिचय के साथ-साथ हिन्दी नवजागरण के महत्त्व का उद्घाटन होगा। आधुनिक हिंदी साहित्य का विकास भारतेंदु युग से लेकर आज तक अनेक धाराओं में विकसित हुआ है जैसे द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयीकविता इत्यादि। इन काव्यधाराओं के अलावा गद्य की प्रमुख विधाओं जैसे कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना, जीवनी, आत्मकथा, हिन्दी पत्रकारिता का अध्ययन भी इसमें सम्मिलित है। इस प्रश्नपत्र के माध्यम से छात्र-छात्राएं साहित्य के सुदीर्घ यात्रा से न केवल परिचित होंगे बल्कि उनके ऐतिहासिक महत्त्व का ज्ञान भी हासिल करेंगे।

इकाई 1 आधुनिक काल: आधुनिकता की अवधारणा, परिस्थितियाँ, काल सीमा, हिन्दी नवजागरण; हिन्दी गद्य का विकास: ईसाई मिशनरियाँ, फोर्ट विलियम कॉलेज, सामाजिक संस्थाओं की भूमिका, हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका।

इकाई 2 आधुनिक काव्य के विभिन्न सोपान: भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता: परिचय और प्रवृत्तियाँ।

इकाई 3 गद्य की विविध विधाएँ – एक: कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध, रेखाचित्र, आलोचना, संस्मरण: विकास-यात्रा एवं विशेषताएँ।

इकाई 4 गद्य की विविध विधाएँ - दो : जीवनी, आत्मकथा, यात्रा-वृत्तान्त, डायरी, पत्र साहित्य, रिपोर्ताज, हिन्दी पत्रकारिता: विकास-यात्रा एवं विशेषताएँ।

अभिस्तावित पुस्तकें:

1. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ- नामवर सिंह, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. बीसवीं शताब्दी का हिन्दी साहित्य- विजय मोहन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
3. हिन्दी गद्य साहित्य- रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. हिन्दी पत्रकारिता और साहित्य-राम अवतार शर्मा, नमन प्रकाशन, दिल्ली
5. हिंदी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

निर्देश :

1. इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है, जिसमें बाह्य परीक्षा हेतु 75 एवं आतंरिक परीक्षा हेतु 25 अंक निर्धारित है।
2. इस प्रश्नपत्र की परीक्षा अवधि 3 घंटे की होगी।
3. प्रत्येक इकाई से 2-2 आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा (15x4=60 अंक)।
4. प्रत्येक इकाई से अनिवार्यतः एक-एक किन्तु कुल पांच टिप्पणियां पूछी जाएँगी, जिनमें से किन्हीं तीन का उत्तर लिखना होगा (5x3=15 अंक)।

पंचम प्रश्नपत्र

HIN-RM-509 **शोध-प्रविधि** **क्रेडिट-4/अंक-100**

परिचय: कुल चार इकाइयों में विभाजित इस प्रश्नपत्र में शोध के सैद्धांतिक और व्यवहारिक पक्षों का अध्ययन सम्मिलित है। इसमें अनुसंधान के स्वरुप तथा अनुसन्धान के विभिन्न रूपों जैसे आलोचनात्मक, तुलनात्मक, विवेचनात्मक एवं पाठालोचन इत्यादि का परिचय दिया जाएगा। इस प्रश्नपत्र में शोध संबंधी तकनीकी ज्ञान भी दिया जाएगा जिसके अंतर्गत कंप्यूटर के प्रयोग की मूलभूत जानकारी सम्मिलित है। शोध की गुणवत्ता का विकास करते हुए मौलिक शोध-दृष्टि का निर्माण करना इस प्रश्नपत्र का मूलभूत लक्ष्य है।

इकाई 1 अनुसंधान का स्वरूप: अर्थ, परिभाषा, तत्त्व एवं प्रकार।

इकाई 2 अनुसंधान की प्रविधि: ऐतिहासिक, भाषा वैज्ञानिक, शैलीवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय पद्धति, अंतर अनुशासनिक, तुलनात्मक, पाठालोचन एवं पाठानुसंधान।

इकाई 3 अनुसंधान की प्रक्रिया: विषय-निर्वाचन, सामग्री-संकलन, शोध कार्य का विभाजन (अध्याय, शीर्षक, उपशीर्षक), रूपरेखा निर्माण, पाद-टिप्पणी, संदर्भोंका उपयोग, संदर्भ-ग्रंथ सूची, शोध-भाषा, पारिभाषिक शब्द।

इकाई 4 शोध में कम्प्यूटर का उपयोग: सामान्य परिचय, शोध और कम्प्यूटर, शोध में इंटरनेट सामग्री का उपयोग (ई-पुस्तकालय- ई पत्रिका, ई पुस्तक), एम. एस. ऑफिस।

अभिस्तावित पुस्तकें:

1. अनुसंधान का स्वरूप- सं. सावित्री सिन्हा, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
2. अनुसंधान की प्रक्रिया- सं. सावित्री सिन्हा, विजयेन्द्र स्नातक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. अनुसंधान प्रविधि और क्षेत्र- राजमल बोरा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
4. इतिहास और आलोचना- नामवर सिंह, सत साहित्य प्रकाशन, बनारस
5. कम्प्यूटर- डॉ. सी. एल. गर्ग, कपिय प्रकाशन, दिल्ली
6. हिन्दी कम्प्यूटिंग- त्रिभुवन नाथ शुक्ल, विकास प्रकाशन, कानपुर
7. शोध-प्रविधि- डॉ. विनय मोहन शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

निर्देश :

1. इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है, जिसमें बाह्य परीक्षा हेतु 75 एवं आतंरिक परीक्षा हेतु 25 अंक निर्धारित है।
2. इस प्रश्नपत्र की परीक्षा अवधि 3 घंटे की होगी।
3. प्रत्येक इकाई से 2-2 आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा (15x4=60 अंक)।
4. प्रत्येक इकाई से अनिवार्यतः एक-एक किन्तु कुल पांच टिप्पणियां पूछी जाएँगी, जिनमें से किन्हीं तीन का उत्तर लिखना होगा (5x3=15 अंक)।

षष्ठ प्रश्नपत्र

HIN-SEC-510 **अनुवाद सिद्धान्त और व्यवहार** **क्रेडिट-4/अंक-100**

परिचय: यह प्रश्नपत्र मूलतः रोजगारपरक हिंदी को ध्यान में रखते हुए निर्मित किया गया है जिसमें अनुवाद की दक्षता को विकसित करना मुख्य लक्ष्य है। अनुवाद से संबंधित विभिन्न पक्षों का अध्ययन करने के साथ-साथ भाषाओँ में पारस्परिक अनुवाद की गुणवत्ता विकसित करना सम्मिलित है। वर्तमान समय में भाषा एवं साहित्य के विस्तार एवं विकास के लिए अनुवाद की अनिवार्य भूमिका है जिसके प्रति दक्षता विकसित करना विशेष महत्त्व का सिद्ध होगा।

इकाई 1 अनुवाद: परिभाषा, प्रकार, विशेषताएँ, सीमाएँ एवं महत्व।

इकाई 2 अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि:विश्लेषण, अंतरण, पुनर्गठन, अनुवाद प्रक्रिया के विविध चरण, स्रोतभाषा एवं लक्ष्यभाषा, अनुवाद प्रक्रिया की प्रकृति।

इकाई 3 अनुवाद की समस्याएँ: साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ, वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, कार्यालयी अनुवाद, विधि एवं वाणिज्यिक अनुवाद।

इकाई 4 (i) हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद।
(ii) अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद।

अभिस्तावित पुस्तकें:

1. अनुवाद और अनुप्रयोग- दिनेश चमोला, अदिश प्रकाशन, देहरादून
2. अनुवाद कला: सिद्धान्त और प्रयोग- कैलाश चन्द्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
3. अनुवाद निरूपण- भारती गोरे, विकास प्रकाशन, कानपुर
4. अनुवाद के विविध आयाम- पूरनचंद टण्डन, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
5. अनुवादविज्ञान- भोलानाथ तिवारी, शब्दाकार प्रकाशन, दिल्ली
6. अनुवाद साधना- पूरनचन्द टण्डन, अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली

निर्देश :

1. इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है, जिसमें बाह्य परीक्षा हेतु 75 एवं आतंरिक परीक्षा हेतु 25 अंक निर्धारित है।
2. इस प्रश्नपत्र की परीक्षा अवधि 3 घंटे की होगी।
3. प्रत्येक इकाई से 2-2 आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा (15X4=60 अंक)।
4. प्रत्येक इकाई से अनिवार्यतः एक-एक किन्तु कुल पांच टिप्पणियां पूछी जाएँगी, जिनमें से किन्हीं तीन का उत्तर लिखना होगा (5X3=15 अंक)।

तृतीय सत्र

प्रथम प्रश्नपत्र

HIN-CC-600 **आदिकालीन काव्य** **क्रेडिट-4/अंक-100**

परिचय: इस प्रश्नपत्र में आदिकालीन हिंदी साहित्य के प्रमुख कवियों की रचनाओं का अध्ययन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया जाएगा। सरहपा, गोरखनाथ, चंदवरदाई, अब्दुर्हमान और विद्यापति आदिकालीन साहित्य को साहित्य समृद्ध एवं विकसित करने वाले रचनाकार रहे हैं। उनके साहित्यिक अवदान के साथ-साथ आदिकालीन काव्य की मूल्यवत्ता का संवेदनात्मक ज्ञान हासिल होगा।

इकाई 1	दोहाकोश–सरहपा; पाठ्यपुस्तक- आदिकालीन काव्य, सं. डॉ. वासुदेव सिंह- विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; दोहा सं. 1, **5, 7, 11, 13,** 15, 17, **19**, 20 सबदी-गोरखनाथ; पाठ्यपुस्तक- आदिकालीन काव्य सं. डॉ. वासुदेव सिंह- विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; पद सं. 3, **5, 6, 8, 9, 13, 14, 17**
इकाई 2	संक्षिप्त पृथ्वीराजरासो- चंदबरदाई -सं. हजारी प्रसाद द्विवेदी एवं नामवर सिंह; प्रारम्भ से सोलह पद आल्हखण्ड-जगनिक; सं. ललित प्रसाद मिश्र; पाठ्य अंश - आल्हा का विवाह (प्रारंभ से 49वें पद तक)
इकाई 3	संदेश रासक – अब्दुर्रहमान; सं. हजारी प्रसाद द्विवेदी एवं डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, पाठ्य अंश - प्रारंभ से सोलह पद
इकाई 4	विद्यापति पदावली- विद्यापति; संपा. शिवप्रसाद सिंह, प्रारम्भ से सोलह पद

अभिस्तावित पुस्तकें:

1. आदिकालीन हिन्दी साहित्य- शम्भुनाथ पाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. गोरखबानी- पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
3. रासो साहित्य विमर्श- माता प्रसाद गुप्त, साहित्य भवन, इलाहाबाद
4. हिन्दी काव्यधारा- राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, इलाहाबाद
5. हिन्दी साहित्य का आदिकाल- हजारी प्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
6. हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास- हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

निर्देश :

1. इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है, जिसमें बाह्य परीक्षा हेतु 75 एवं आतंरिक परीक्षा हेतु 25 अंक निर्धारित है।
2. इस प्रश्नपत्र की परीक्षा अवधि 3 घंटे की होगी।
3. प्रत्येक इकाई से 2-2 आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा (15x4=60 अंक)।
4. प्रत्येक इकाई से अनिवार्यतःएक-एक किन्तु कुल पांच व्याख्याएं पूछी जाएँगी जिनमें से किन्हीं तीन की व्याख्या करनी होगी (5x3=15 अंक)।

द्वितीय प्रश्न पत्र

HIN-CC-601 **हिन्दी गद्य : विविध विधाएं** **क्रेडिट-4/अंक-100**

परिचय: यह प्रश्नपत्र आधुनिक काल में विकसित होने वाली गद्य विधाओं पर केन्द्रित है । नाटक, निबंध, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्तांत, संस्मरण, रेखाचित्र एवं रिपोर्ताज ऐसी गद्य विधाएं हैं जो आधुनिक हिन्दी साहित्य को सम्पूर्णता देने के लिए अनिवार्य हैं। इन विधाओं के माध्यम से विद्यार्थी प्रमुख गद्य लेखकों एवं उनकी उल्लेखनीय कृतियों से परिचित हो सकेंगे। आधुनिक हिंदी साहित्य के विकास में विभिन्न गद्य विधाओं की भूमिका एक-एक स्तम्भ की तरह से हैं जिनके द्वारा छात्र-छात्राएं उन गद्य विधाओं के अनिवार्य महत्त्व से परिचित हो होंगे।

इकाई 1 नाटक एवं एकांकी: पाठ्य नाटक- चन्द्रगुप्त- जयशंकर प्रसाद, आधे अधूरे- मोहन राकेश; पाठ्य एकांकी- औरंगजेब की आखिरी रात- रामकुमार वर्मा, भोर का तारा- जगदीश चंद माथुर, स्ट्राइक- भुवनेश्वर।

इकाई 2 निबंध- पाठ्य निबंध- कविता क्या है – आ. रामचंद्र शुक्ल, कुटज- आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, पगडंडियों का जमाना- हरिशंकर परसाई, प्रिया नीलकंठी- कुबेरनाथ राय।

इकाई 3 जीवनी- आवारा मसीहा (संक्षिप्त संस्करण)- दिशा की खोज - विष्णु प्रभाकर

आत्मकथा- जूठन - ओमप्रकाश बाल्मीकि

यात्रा-वृत्तांत- अरे यायावर रहेगा याद- अज्ञेय

इकाई 4 संस्मरण, रेखाचित्र एवं रिपोर्ताज, पाठ्य पुस्तक- हिन्दी के श्रेष्ठ रेखाचित्र- सं. डॉ. चौथीराम यादव, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

पाठ्य अंश- तुम्हारी स्मृति - माखनलाल चतुर्वेदी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल: कुछ संस्मरण - रायकृष्ण दास, सरयू भैया- रामबृक्ष 'बेनीपुरी', बच्चा महाराज - पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', लक्षमा- महादेवी वर्मा, तिब्बत की सीमा पर- राहुल सांकृत्यायन, बैसवाड़े में निराला - रामविलास शर्मा, आदमी का बच्चा – हरिशंकर परसाई, रिपोर्ताज- जुलूस रूका है- विवेकी राय।

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. हिन्दी नाटक का उद्भव एवं विकास- डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली
2. हिन्दी नाटक- बच्चन सिंह, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. हिन्दी निबंध और निबंधकार-रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. साहित्यिक निबंध- डॉ. त्रिभुवन सिंह एवं डॉ. विजय बहादुर सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

निर्देश :

1. इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है, जिसमें बाह्य परीक्षा हेतु 75 एवं आतंरिक परीक्षा हेतु 25 अंक निर्धारित है।
2. इस प्रश्नपत्र की परीक्षा अवधि 3 घंटे की होगी।
3. प्रत्येक इकाई से 2-2आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा (15x4=60 अंक)।
4. प्रत्येक इकाई से अनिवार्यतःएक-एक किन्तु कुल पांच व्याख्याएं पूछी जाएँगी जिनमें से किन्हीं तीन की व्याख्या करनी होगी (5x3=15 अंक)।

तृतीय प्रश्न पत्र

HIN-CC-602 **हिन्दी आलोचना एवं विमर्श** **क्रेडिट-4/अंक-100**

परिचय: यह प्रश्नपत्र हिंदी आलोचना की विकास यात्रा एवं उसके प्रमुख आलोचकों के साहित्यिक अवदान पर केन्द्रित है। साथ ही इस प्रश्नपत्र के अंतर्गत आधुनिक हिंदी साहित्य को प्रभावित एवं प्रेरित करने वाले विमर्शों जैसे दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श एवं स्त्री विमर्श आदि पर केन्द्रित है। साहित्य के विकास में आलोचना की भूमिका मशाल की तरह होती है जिसका ज्ञान प्राप्त करना साहित्य के विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य है। इस प्रश्नपत्र के द्वारा विभिन्न समकालीन विमर्शों की महत्ता एवं अनिवार्यता से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।

इकाई 1 हिन्दी आलोचना- उद्भव एवं विकास, आलोचना के भेद; भारतेंदुयुगीन आलोचना, द्विवेदीयुगीन आलोचना : प्रमुख प्रवृत्तियाँ।

इकाई 2 प्रगतिशील आलोचना- प्रकाशचन्द गुप्त, शिवदान सिंह चौहान, रामविलास शर्मा, नामवर सिंह।

इकाई 3 समानान्तर आलोचना–आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, नन्ददुलारे वाजपेयी, रामस्वरूप चतुर्वेदी, डॉ. नगेन्द्र।

इकाई 4 उत्तर आधुनिक विमर्श- उत्तर उपनिवेशवाद, संरचनावाद, विखंडनवाद; स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श।

अभिस्तावित पुस्तकें:

1. आदिवासी साहित्य की भूमिका- गंगा सहाय मीणा, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली
2. आदिवासी साहित्य यात्रा-संपा. रमणिका गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
3. दलित साहित्य के प्रतिमान-डॉ. एन. सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
4. दलित विमर्श की भूमिका- कंवलभारती, के. के. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
5. दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र-ओमप्रकाश बाल्मीकि, राजकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
6. स्त्री मुक्ति के प्रश्न-रामविलास शर्मा, गोदारण प्रकाशन, अलीगढ़
7. हिन्दी आलोचना- विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास- सुमन राजे, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली

निर्देश :

1. इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है, जिसमें बाह्य परीक्षा हेतु 75 एवं आतंरिक परीक्षा हेतु 25 अंक निर्धारित है।
2. इस प्रश्नपत्र की परीक्षा अवधि 3 घंटे की होगी।
3. प्रत्येक इकाई से 2-2 आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा (15x4=60 अंक)।
4. प्रत्येक इकाई से अनिवार्यतः एक-एक किन्तु कुल पांच टिप्पणियां पूछी जाएँगी, जिनमें से किन्हीं तीन का उत्तर लिखना होगा (5x3=15 अंक)।

चतुर्थ प्रश्न पत्र

HIN-DSEC-603 **भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा एवं लिपि** **क्रेडिट-4/अंक-100**

परिचय: इस प्रश्नपत्र में भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा के विकास एवं उसकी लिपि का अध्ययन किया जायेगा। साथ ही हिंदी भाषा के मूलभूत स्वरुप से परिचित कराना इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य है। इसके द्वारा न केवल हिंदी भाषा के ज्ञान की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होगी बल्कि हिंदी भाषा के स्तर को ऊँचा रखने के लिए व्याकरण सम्मत लिपि क्यों अनिवार्य है इसका भी ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

इकाई 1 भाषा: परिभाषा एवं विशेषताएँ, भाषा के विविध रूप, भाषा के विविध पक्ष, भाषा विज्ञान: परिभाषा, अध्ययन पद्धतियाँ, भाषा विज्ञान के भेद।

इकाई 2 ध्वनि विज्ञान : ध्वनि की परिभाषा, ध्वनि के आयाम (उच्चारणात्मक, प्रसारणिक, श्रवणात्मक), ध्वनि के भेद, ध्वनि नियम, ध्वनि परिवर्तन की दिशाएं एवं कारण; रूप-विज्ञान: रूप की अवधारणा, रूपिम और संरूप की परिभाषा, रूप परिवर्तन की दिशाएँ और कारण।

इकाई 3 वाक्य-विज्ञान: वाक्य की परिभाषा, वाक्य के भेद, वाक्य परिवर्तन के कारण; अर्थ-विज्ञान: अर्थ की अवधारणा, अर्थ-परिवर्तन कीदिशाएँ और कारण।

इकाई 4 हिन्दी भाषा का विकास: प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ, मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ, आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ; नागरी लिपि: उद्भव एवं विकास, मानकीकरण, गुण-दोष एवं सुधार के उपाय।

अभिस्तावित पुस्तकें:

1. नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी- अनन्तलाल चौधरी, बिहार ग्रन्थ अकादमी, पटना
2. भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी- सुनीति कुमार चटर्जी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि- धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
4. हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास- उदय नारायण तिवारी, उदय नारायाण तिवारी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
6. भाषा विज्ञान-भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद
7. भाषाविज्ञान की भूमिका- देवेन्द्र नाथ शर्मा, अनुपम प्रकाशन, पटना

निर्देश :

1. इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है, जिसमें बाह्य परीक्षा हेतु 75 एवं आतंरिक परीक्षा हेतु 25 अंक निर्धारित है।
2. इस प्रश्नपत्र की परीक्षा अवधि 3 घंटे की होगी।
3. प्रत्येक इकाई से 2-2 आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा (15x4=60 अंक)।
4. प्रत्येक इकाई से अनिवार्यतः एक-एक किन्तु कुल पांच टिप्पणियां पूछी जाएँगी, जिनमें से किन्हीं तीन का उत्तर लिखना होगा (5x3=15 अंक)।

पंचम प्रश्नपत्र

HIN-DSEC-604 **लोक साहित्य** **क्रेडिट-4/अंक-100**

परिचय: लोक जीवन और संस्कृति भारत ही नहीं वैश्विक मानव समाज का प्रमुख आधार रहा है। इस प्रश्नपत्र के अंतर्गत लोक जीवन, समाज, साहित्य और संस्कृति का अध्ययन किया जायेगा। साथ ही लोक के बीच विकसित विविध कलाओं का ज्ञान भी इसमें शामिल है। पूर्वोत्तर भारत के साहित्य के विविध आयामों का परिचय भी दिया जाएगा। लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य में अनिवार्य सम्बन्ध है। शिष्ट साहित्य के समानांतर लोक साहित्य की अनिवार्य महत्ता को सिद्ध करना वर्तमान समय में पहले से भी अधिक जरुरी हो चुका है।

इकाई 1 लोक और लोकवार्ता: अवधारणा, अध्ययन की परंपरा एवं विस्तार।

इकाई 2 लोक मानस औरलोक साहित्य: अवधारणा एवं अभिव्यक्ति के माध्यम-संस्कार, विश्वास, प्रचलित मान्यताएँ, साहित्य,संगीत, नृत्य एवं कला।

इकाई 3 हिन्दी लोक साहित्य का परिचय एवं प्रमुख रूप: (क) लोक गीत (ख) लोक कथा (ग) लोक नाट्य (घ) लोक गाथा (ड) लोक सुभाषित; हिन्दी प्रदेशों में उपलब्ध लोक साहित्य का वर्गीकरण: (क) संस्कारों की दृष्टि से (ख) रस की दृष्टि से (ग) त्यौहारों की दृष्टि से (घ) श्रमपरिहार की दृष्टि से।

इकाई 4 पूर्वोत्तर भारत का लोक साहित्य- गीत, कथा, नाट्य, गाथा, सुभाषित।

अभिस्तावित पुस्तकें:

1. भारत में लोक साहित्य- कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन, इलाहबाद
2. लोक कथा कोश- संगीता, प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली
3. लोक गीतों के संदर्भ और आयाम- शांति जैन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. लोक परंपरा: पहचान एवं प्रवाह-श्याम सुंदर दुबे, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
5. लोक मानस-विद्या बिन्दु सिंह, मधु प्रकाशन इलाहाबाद
6. लोक साहित्य की भूमिका-कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन, इलाहबाद
7. लोक साहित्य का विज्ञान- सत्येन्द्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
8. लोक साहित्यविमर्श- श्याम परमार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

निर्देश :

1. इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है, जिसमें बाह्य परीक्षा हेतु 75 एवं आतंरिक परीक्षा हेतु 25 अंक निर्धारित है।
2. इस प्रश्नपत्र की परीक्षा अवधि 3 घंटे की होगी।
3. प्रत्येक इकाई से 2-2 आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा (15x4=60 अंक)।
4. प्रत्येक इकाई से अनिवार्यतः एक-एक किन्तु कुल पांच टिप्पणियां पूछी जाएँगी, जिनमें से किन्हीं तीन का उत्तर लिखना होगा (5x3=15 अंक)।

षष्ठ प्रश्नपत्र

HIN-DSEC-605 **रचनात्मक लेखन** **क्रेडिट-4/अंक-100**

परिचय: यह प्रश्नपत्र छात्रों में रचनात्मक क्षमता के विकास के लिए निर्मित किया गया है जिसमें संपादन, प्रकाशन के साथ-साथ साहित्यिक सृजन और सिनेमा इत्यादि रचनात्मक क्षेत्र भी सम्मिलित हैं। इस प्रश्नपत्र के माध्यम से छात्रों को मीडिया के महत्त्व और उसके विविध रूपों से परिचित कराना मूल उद्देश्य है। साहित्य एक प्रकार से सृजन की जमीन है जिसके द्वारा जीवन और जगत की प्रतिसृष्टि संभव होती है। इसलिए नैसर्गिक रचनात्मक प्रतिभा को प्रेरित एवं विकसित करना वर्त्तमान समय में जरूरी है।

इकाई 1 रचनात्मक लेखन: परिचय, अवधारणा, उद्देश्य, तत्त्व- विषय, मूल्य, यथार्थ, उपयोगिता एवं भाषा, संपादन, प्रकाशन, रचनात्मक लेखन के विविध रूप- रचनात्मक साहित्य लेखन, मीडिया लेखन, रंग लेखन एवं सिनेमा लेखन।

इकाई 2 रचनात्मक साहित्य लेखन: परिचय, अवधारणा, उद्देश्य; काव्य लेखन, कथा लेखन, निबंध एवं आलोचना लेखन; नाट्य लेखन।

इकाई 3 मीडिया लेखन : परिचय, अवधारणा, उद्देश्य; समाचार लेखन, फीचर लेखन, संपादकीय लेखन।

इकाई 4 रंग लेखन एवं सिनेमा लेखन : परिचय, अवधारणा एवं उद्देश्य; रंगमचीय लेखन, पटकथा लेखन, संवाद लेखन।

अभिस्तावित पुस्तकें:

1. आधुनिक हिन्दी कालजयी साहित्य- अर्जुन चौहान, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
2. पटकथा लेखन व्यावहारिक निर्देशिका- असगर वजाहत, राजकमल प्रकाशन
3. भारतीय सिनेमा- प्रसूनसिन्हा, नटराज प्रकाशन, दिल्ली
4. फिल्म निर्देशन- कुलदीप सिन्हा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
5. मीडिया लेखन सिद्धांत और व्यवहार- डॉ. चन्द्रप्रकाश मिश्र, संजय प्रकाशन, दिल्ली
6. सिनेमा के चार अध्याय- डॉ. टी. शशिधरन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. हिन्दी पत्रकारिता और साहित्य-राम अवतार शर्मा,राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
8. हिंदी सिनेमा का समाजशास्त्र- जवरीमल्लपारिख, ग्रन्थ शिल्पी
9. हिन्दी रंगमच-डॉ. रमा, शिवालिक प्रकाशन, नई दिल्ली

निर्देश :

1. इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है, जिसमें बाह्य परीक्षा हेतु 75 एवं आतंरिक परीक्षा हेतु 25 अंक निर्धारित है।
2. इस प्रश्नपत्र की परीक्षा अवधि 3 घंटे की होगी।
3. प्रत्येक इकाई से 2-2 आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा (15x4=60 अंक)।
4. प्रत्येक इकाई से अनिवार्यतः एक-एक किन्तु कुल पांच टिप्पणियां पूछी जाएँगी, जिनमें से किन्हीं तीन का उत्तर लिखना होगा (5x3=15 अंक)।

चतुर्थ सत्र

HIN-DSEC-606 **लघु शोध - प्रबंध** **क्रेडिट-20/अंक-500**

परिचय: इस प्रश्नपत्र में किसी एक विषय पर लघु शोध-प्रबंध लिखा जाएगा जिसका आधार शोध के मानक होंगे। यह प्रश्नपत्र विद्यार्थियों के भीतर शोध दृष्टि को विकसित करने के लिए निर्मित किया गया है, इस अर्थ में विशिष्ट महत्त्व का है। इसके द्वारा विद्यार्थियों के भीतर शोध की गुणवत्ता एवं सम्यक शोध-दृष्टि का विकास हो सकेगा।

विषय निर्वाचन एवं प्रमाणीकरण	2	50
प्रस्ताव लेखन एवं प्रस्तुति	3	75
सामग्री संकलन एवं विश्लेषण	3	75
लघु शोध प्रबंध लेखन	8	200
मौखिकी	4	100
	20	500

निर्देश:

1. इस प्रश्नपत्र में विषय एवं निर्देशक का निर्धारण विभाग द्वारा द्वितीय सत्र के अंत में कर किया जाएगा।

2. इस प्रश्नपत्र में क्रेडिट के अनुसार अंकों का विभाजन किया गया है, तदनुसार विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का मूल्यांकन विश्वविद्यालय के नियमानुसार किया जाएगा।

3. लघु शोध-प्रबन्ध का आकार एक सौ से एक सौ पच्चीस पृष्ठों का होगा।

25/9/2023 25/09/2023

25.09.2023 (25.9.023)

आलोक सिंह 25/09/2023 25/9/23

25/09/23